

भगत नामदेव – सबद ४२
कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥
रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६४

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥
कबहू घर घर टूक मगावै ॥
कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १ ॥
जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥
कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २ ॥
कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥
कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ ३ ॥
भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ ४ ॥ ५ ॥

सार: जीवन में समृद्धि होने के बावजूद, अगर मन अंदर से असंतुष्ट हो तो जीवन नीरस लग सकता है। बेचैनी, इच्छा या अपने वास्तविक स्वरूप से कटे होने के कारण पैदा हुए ख़ालीपन को किसी भी तरह के आराम, सफलता या चीज़ों से नहीं भरा जा सकता। वास्तविक संतुष्टि अधिक पाने से नहीं, बल्कि संतोष, कृतज्ञता और आंतरिक स्पष्टता के विकास से जन्म लेती है। जब मन में आंतरिक सामंजस्य होता है तब जीवन के साधारण पल भी अर्थपूर्ण हो जाते हैं। यह बोध कराता है कि संपन्नता परिस्थितियों का परिणाम नहीं बल्कि हमारी दृष्टि और चेतना की अवस्था है।

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥
कभी दूध की खीर, चीनी और घी भी अच्छे नहीं लगते। यह दर्शाता है कि अगर मन भीतर से असंतुष्ट हो तब संपन्न होने पर भी, सब बेस्वाद लग सकता है।

कबहू घर घर टूक मगावै ॥

कभी घर-घर जाकर भोजन के लिए भीख मांगनी पड़ती है। यह जीवन के अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव की कठोर सच्चाई को दिखाता है और हमें विनम्रता और कृतज्ञता का महत्व याद दिलाता है।

कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १॥

कभी भूखी में मिले चनों को बीनना पड़ता है। यह उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके जीवित रहने की क्षमता को दर्शाता है। (१)

जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥

हे भाई, जैसा सार्वभौमिक विधान रखे, वैसा ही स्वीकार करके जीवन जीना चाहिए। बिना किसी शिकायत या असंतोष के, यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रति समर्पण और उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १॥ रहाउ ॥

सर्वव्यापक सत्ता की महिमा का पूर्ण वर्णन नहीं किया जा सकता। यह स्वीकार करता है कि जीवन के गहन रहस्यों को शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता, उन्हें केवल एकत्व की अनुभूति के माध्यम से जिया जा सकता है। (१)(रहाउ)

कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥

कभी घोड़ों की सवारी की जाती है और कभी उन्हें नचाया जाता है। यह दृश्य दिखाता है कि कैसे अहं विलासिता का आनंद लेने और संसाधनों का दुरुपयोग करने के लिए अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है।

कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २॥

कभी पैरों में पहनने के लिए जूते भी नहीं होते। यह स्थिति की अस्थिरता की ओर इशारा करता है जो कभी भी बदल सकती है और आंतरिक स्थिरता की परीक्षा को भी दर्शाता है। (२)

कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥

कभी इंसान सफ़ेद चादर वाले बिस्तर पर सोता है। यह दृश्य शांति, निर्मलता और आज़ादी का प्रतीक है जिससे मन को स्पष्टता मिलती है।

कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥३॥

कभी धरती पर इतना समतल स्थान नहीं मिलता कि तिनके के बराबर भी टिक सकें। यह अनिश्चितता और कट्टरता की स्थिति को दर्शाता है, जिसमें मन को भीतर स्थिरता और शांति नहीं मिल पाती।
(३)

भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥

नामदेव कहते हैं कि सर्वव्यापी एकत्व की अनुभूति का चिंतन ही ज्ञानोदय प्रदान करता है। यह बताता है कि भौतिक जीवन के उतार-चढ़ाव के बीच, स्रोत से आंतरिक जुड़ाव ही एकमात्र स्थिरता का तत्व रहता है।

जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥४॥५॥

जिन्हें आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि मिलती है, वह अज्ञान से जागृति की ओर बढ़ते हैं। यह परिवर्तन दिखाता है कि आंतरिक स्पष्टता संदेह को दूर करती है और व्यक्ति को असुरक्षा पर विजय पाने में सक्षम बनाती है। (४)(५)

तत्त्व: भगत नामदेव बहुत प्रभावशाली ढंग से बताते हैं कि सच्ची आध्यात्मिक ऊँचाई इस बात से तय नहीं होती कि हम ऊँचे स्थान पर हैं या जीवन की मुश्किलों से जूझ रहे हैं। वास्तविक प्रश्न यह है कि क्या हमारी अंतरात्मा ने वह समझ हासिल कर ली है जो दोनों ही स्थितियों में बेहतर ढंग से जीने के लिए ज़रूरी है। इस अटूट स्थिरता में, अनिश्चितता भी एक सार्थक अनुभव में बदल जाती है और हम सुख-सुविधा या अभाव जैसी धारणाओं से ऊपर उठ जाते हैं। यह समझ बताती है कि परिस्थितियों के निरंतर बदलते रहने के बीच, अपने गहन स्वरूप से हमारा आंतरिक संबंध ही जीवन का एकमात्र अटल आधार है जो जीवन के हर उतार-चढ़ाव में हमें मज़बूती से थामे रखता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com